13.5.2019 नईदुनिया

THE TIMES OF INDIA

DAVV to have NCC from new academic session

While Devi Ahilya Vishwavidyalaya (DAVV) already has National Service Scheme (NSS), the varsity will soon have National Cadet Corps (NCC) from the new academic session for all students of the UTD.

NAAC questions DAVV's self-study report

DAVV has got a list of queries from National Assessment and Accreditation Council (NAAC) regarding their self-study report (SSR) which have to be submitted by May 20. DAVV media spokesperson Dr Chandan Gupta said SSR has a link or certificate missing.

यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और स्टूडेंट्स संभालेंगे आईटी की जिम्मेदारी

देअविवि इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी से संबंधित काम एजेंसियों को नहीं देगी

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी अपने प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स को नए रोल में पेश करने जा रही है। इसके तहत यूनिवर्सिटी में इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (आईटी) से संबंधित जिम्मेदारी प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स को मिलने जा रही है। इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईईटी), स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस और आईआईपीएस विभागों से यूनिवर्सिटी ऐसे प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स की तलाश कर रही है, जो टेक्नोलॉजी के एक्सपर्ट हैं। इनकी टीम बनाकर यूनिवर्सिटी प्रशासनिक और एकेडमिक कामों के लिए ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर और विभागों की नई वेबसाइट बनवाने का काम करेगी।

यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. नरेंद्र धाकड़ का कहना है कि अब यूनिवर्सिटी अपने ही प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स को प्रमोट करेगी। बाहर की कंपनियों में जो एक्सपर्ट काम करते हैं, उनसे बेहतर आईटी के जानकार यूनिवर्सिटी के ही विभागों में हैं। ऐसे में बाहर की आईटी कंपनियों को कोई नया काम नहीं दिया जाएगा। इससे प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स को भी नई पहचान मिलेगी।

बचेंगे करोड़ रुपए

हर विभाग में स्टूडेंट्स को प्रोजेक्ट बनाना पड़ता है। अब यूनिवर्सिटी के भी विभिन्न कार्य विभागों में प्रोजेक्ट के तौर पर होंगे। इसमें एक्सपर्ट प्रोफेसर्स प्रोजेक्ट के लिए राय देंगे। पिछले सालों में इस तरह के काम कुछ विभाग में हो चुके हैं। इसकी शुरुआत आईआईपीएस विभाग से हुई थी। वहां के स्टूडेंट्स ने सबसे पहले अपने विभाग की वेबसाइट बनाई थी। इसके बाद अन्य विभागों ने भी स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स से वेबसाइट बनवाई थी। यूनिवर्सिटी ने एप भी बनवाया था। इसे भी नए रूप में तैयार किया जाएगा। कुलपति का कहना है कि इससे संस्थान के करोड़ों रुपए बचेंगे।

जॉब प्लेसमेंट कंपनियों को दिखाएंगे काम

इस तरह के प्रयोग के पीछे यूनिवर्सिटी का मकसद जॉब प्लेसमेंट के लिए आने वाली कंपनियों को भी यह बताना है कि कितने काम स्टूडेंट्स ने यूनिवर्सिटी के लिए किए हैं। नैक के निरीक्षण के समय भी बताया जाएगा कि यूनिवर्सिटी ने अपने ही सोर्सेस से आईटी के काम किए हैं। जो प्रोजेक्ट यूनिवर्सिटी में लागू होगा उसमें हमेशा के लिए योगदान देने वाले प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स के नाम लिखे रहेंगे।

आईआईटी के तर्ज पर किया जा रहा है काम

कुलपति का कहना है कि देश के कई उच्च संस्थान प्रोजेक्ट के तौर पर अपने ही प्रोफेसर्स और स्टूडेंट्स को आईटी की जिम्मेदारी देते हैं। इससे स्टूडेंट्स की क्वालिटी सुधरती है और उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। आईआईटी और आईआईएम इंदौर और अन्य संस्थानों में भी प्रोफेसर्स की मदद से स्टूडेंट्स खुद वेबसाइट, एप और अन्य तरह के प्रोजेक्ट तैयार करते हैं।